डॉ. अर्पिता अग्रवाल

उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश की रामसर साइट आर्द्रभूमियां

आर्द्रभूमि के स्वच्छ जल या खारे जल से बने विशेष पारिस्थितिकी तंत्र में हजारों भिन्न-भिन्न जीव-जंतुओं की प्रजातियों का जीवन यापन होता है। आर्द्रभूमि में जलीय व स्थलीय जैव विविधता भरपूर मात्रा में पाई जाती है। यहां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध विशेष प्रकार की वनस्पतियों के कारण प्रवासी पक्षी आकर्षित होते हैं और उनका मेला सा लग जाता है। आर्द्रभूमि क्षेत्र के स्थानीय लोगों की आजीविका का साधन भी बनती है क्योंकि प्रवासी पक्षियों को देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं, जिससे पर्यटन बढ़ता है और वह क्षेत्र पर्यटन स्थल के रूप में विकसित होने लगता है।

ईरान के रामसर शहर में कैस्पियन सागर के तट पर 2 फरवरी सन् 1971 को एक महासम्मेलन हुआ था जिसमें आर्द्रभूमि क्षेत्र के संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक करने का निर्णय लिया गया। इस महासम्मेलन में आर्द्रभूमि समझौते को मंजूरी दी गई तथा महत्वपूर्ण आर्द्रभूमि क्षेत्रों को रामसर क्षेत्र घोषित कर उन्हें विश्व पटल पर मान्यता दिलाने व संरक्षण करने का कार्य आरंभ हुआ। तब से प्रति वर्ष 2 फरवरी को 'विश्व आर्द्रभूमि दिवस' मनाया जाता है। वर्ष 2019 तक भारत में रामसर क्षेत्रों की संख्या 27 थी। वर्ष 2020 में 14 नए रामसर क्षेत्र घोषित होने से इनकी संख्या 41 हो गई थी। जो कि वर्ष 2024 में 85 हो गई है। प्रत्येक वर्ष के लिए 'विश्व आर्द्रभूमि दिवस' का एक विषय चुना जाता है। वर्ष 2024 में विश्व आर्द्रभूमि दिवस का विषय 'आर्द्रभूमि और जैव विविधता' था।

ऐसी भूमि जहां प्रायः जल उपलब्ध रहता हो जैसेः झील, नदी, तालाब आदि के नमीयुक्त तटों के भू-भाग, आर्द्रभूमि कहलाते हैं। आर्द्रभूमि का अर्थ है दलदल या नम स्थान। आर्द्रभूमि की धरती के कुल क्षेत्रफल में 2-6 प्रतिशत की भागीदारी है। यहां वर्षभर जल उपलब्ध रहता है। आर्द्रभूमि का पारिस्थितिकी तंत्र अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

आर्द्रभूमि के स्वच्छ जल या खारे जल से बने विशेष पारिस्थितिकी तंत्र में हजारों भिन्न-भिन्न जीव-जंतुओं की प्रजातियों का जीवन यापन होता है। आर्द्रभूमि में जलीय व स्थलीय जैव विविधता भरपूर मात्रा में पाई जाती है। यहां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध विशेष प्रकार की वनस्पतियों के कारण प्रवासी पक्षी आकर्षित होते हैं और उनका मेला सा लग जाता है। आर्द्रभूमि क्षेत्र के स्थानीय लोगों की आजीविका का साधन भी बनती है क्योंकि प्रवासी पक्षियों को देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं, जिससे पर्यटन बढ़ता है और वह क्षेत्र पर्यटन स्थल के रूप में विकसित होने लगता है।

जहां भी जलाशय, झील, तालाब, पोखर, ताल-तलैया, नदियां, नाले बचे हैं अर्थात आर्द्रभूमि बची हुई हैं वहां भूजल, भू-सतह के अत्यधिक निकट है। जहां यह नहीं बचे वहां भू-जल स्तर बहुत नीचे जा चुका है। आर्द्रभूमि से जल की गुणवत्ता ठीक रहती है। आर्द्रभूमि जैव विविधता के लिए वरदान है। जल चक्र में आर्द्रभूमि का बहुत योगदान है। ये क्षेत्र छन्नी की तरह कार्य करते हैं। आर्द्रभूमि क्षेत्र कीटनाशकों, औद्योगिक कारखानों के हानिकारक तत्वों को छानकर जल की गुणवत्ता ठीक करते हैं। वर्षा जल का 90% भाग इन्हीं आर्द्रभूमियों द्वारा भूजल में पुनःपूरित किया जाता है। कुछ देश औद्योगिक कचरे को शोधित करने के लिए आर्द्रभूमि विकसित करते हैं। यूक्रेन में कृत्रिम आर्द्रभूमि विकसित कर दवा उत्पादों के कचरे को साफ किया जाता है।

आसन कंजर्वेशन रिजर्व

उत्तराखंड में वर्ष 2020 में पहला रामसर स्थल 'आसन कंजर्वेशन रिज़र्व' घोषित हुआ। यह देश की पहली कंजर्वेशन रिज़र्व आर्द्रभूमि है जो रामसर साइट घोषित हुई है। यमुना और आसन नदियों के संगम पर स्थित ''आसन कंजर्वेशन रिजर्व'' पक्षी प्रेमियों में अत्यधिक लोकप्रिय है। इस संगम पर निर्मित कृत्रिम झील आसन बैराज पक्षी अभयारण्य के अंतर्गत आती है। आसन पक्षी अभयारण्य की स्थापना 1967 में की गई थी। यह स्थान साइबेरियन पक्षियों के प्रवास स्थल के रूप में प्रसिद्ध

है। देहरादून जिले में विकास नगर से 8 किलोमीटर दूर आसन बैराज और उसके आस-पास का क्षेत्र वर्ष 2005 में आसन कंजर्वेशन रिजर्व घोषित किया गया था। विश्व के मानचित्र पर आने से यहां पक्षी प्रेमी, पर्यटन और शोध कार्यों में लगे छात्रों की संख्या बढ़ी है।

उत्तर प्रदेश में दस रामसर आर्द्रभूमि क्षेत्र हैं, पहले उत्तर प्रदेश में सिर्फ एक रामसर क्षेत्र 'ऊपरी गंगा नदी (बृजघाट से नरोरा तक)' था। उत्तर प्रदेश सरकार के प्रयासों से वर्ष 2020 में प्रदेश में 7 आर्द्रभूमि क्षेत्रः उन्नाव का नवाबगंज पक्षी विहार, गोंडा का पार्वती अरंगा वन्य जीव विहार, मैनपुरी का समन पक्षी विहार, रायबरेली का समसपुर पक्षी विहार, हरदोई का सांडी पक्षी विहार, इटावा की सरसई नावर झील, एवं आगरा का सूर सरोवर, रामसर क्षेत्र घोषित हुए हैं। वर्ष 2021 में हैदरपुर आर्द्रभूमि उत्तर प्रदेश का नवां रामसर क्षेत्र बना। वर्ष 2022 में बखिरा वन्य जीव अभयारण्य को उत्तर प्रदेश का दसवां रामसर स्थल घोषित किया गया। भविष्य में उत्तर प्रदेश में कई और आर्द्रभूमि क्षेत्र रामसर क्षेत्र घोषित हो सकते हैं।

आसन कंजर्वेशन रिजर्व आर्द्रभूमि

ऐसी भूमि जहां प्रायः जल उपलब्ध रहता हो जैसेः झील, नदी, तालाब आदि के नमीयुक्त तटों के भू-भाग, आर्द्रभूमि कहलाते हैं। आर्द्रभूमि का अर्थ है दलदल या नम स्थान। आर्द्रभूमि की धरती के कुल क्षेत्रफल में 2-6 प्रतिशत की भागीदारी है। यहां वर्षभर जल उपलब्ध रहता है। आर्द्रभूमि का पारिस्थितिकी तंत्र अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

ऊपरी गंगा नदी आर्द्रभूमि क्षेत्र

'ऊपरी गंगा नदी' उत्तर प्रदेश का प्रथम आर्द्रभूमि क्षेत्र है। बृजघाट से नरोरा तक के विस्तार को 'ऊपरी गंगा नदी' कहते हैं। नदी के तट पर अत्यंत सुंदर मार्ग से होते हुए नरोरा नाभिकीय विद्युत संयंत्र तक जाने पर ऊपरी गंगा नदी के तट मार्ग द्वारा ही जाना होता है। सम्पूर्ण मार्ग अत्यंत सुंदर है और यहां आम के अनेक बाग स्थित हैं। इन बागों में अत्यंत रसीले और खुशबूदार आम, जो कि गंगा की उपजाऊ भूमि के कारण उत्पादित होते हैं, पाये जाते हैं।

सांडी पक्षी विहार

सांडी पक्षी विहार 1980 में निर्मित किया गया तथा इसका प्राचीन नाम दहर झील था। सांडी पक्षी विहार उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले में स्थित है। दहर झील में पानी गर्रा नदी जिसे गरुड़ गंगा नदी भी कहते है, से प्राप्त होता है। झील के चारों तरफ कच्चा मार्ग बना है। यहां वृहत्त मात्रा में खिले हुए कमल के फूल दिखाई देते हैं जो अति सुंदर प्राकृतिक दृश्य प्रस्तुत करते हैं। नवंबर से मार्च तक यहाँ प्रवासी पक्षी आते हैं। यहाँ एक बोर्ड पर उन प्रवासी पक्षियों के नाम लिखे हैं जो यहां प्रति वर्ष आते हैं। यहां स्थानीय पक्षियों के नाम के बोर्ड भी जगह-जगह लगे हुए दिखाई देते हैं। घना जंगल, कंटीली झाड़ियां, बैठने के लिए बेंच और घूमते हुए जानवर, विभिन्न पक्षियों की गूंजती आवाज़ें, जलीय वनस्पति, सभी कुछ उस शांत वातावरण में मन-मोहक लगता है। सितंबर 2019 में इस पक्षी विहार को सांडी नाम मिला। यहां इंडियन पॉर्क्युपाइन (साही) के कांटे भी पड़े हुए दिख जाते हैं। यहां पर मुख्यतः सारस दिखाई देते हैं। सांडी पक्षी महोत्सव के द्वारा लोगों में जागरूकता पैदा करने और पक्षी विहारों को देखने के लिए प्रेरित करने का कार्य भी यहां पर हो रहा है।

समसपुर पक्षी विहार

समसपुर पक्षी विहार उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले में स्थित है। इसके अंदर पक्षी व्याख्या केंद्र स्थापित है। इसके अंदर स्थित झील को वरना तालाब भी कहते हैं। झील के चारों तरफ पक्की सड़क बनी हुई है। विहार के अंदर मचान बने हुए हैं। यहाँ जानवर, वनस्पतियां, बबूल के पेड़ दृष्टिगोचर होते हैं।

नवाबगंज पक्षी विहार

उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में स्थित नवाबगंज पक्षी विहार का नाम शहीद चंद्रशेखर आजाद पक्षी विहार कर दिया गया है। इस पक्षी विहार की स्थापना वर्ष 1984 में हुई थी। इसमें एक बहुत बड़ी झील स्थित है, झील के चारों तरफ बने मार्ग पर लोग चलते हैं। यहां गेट पर ही बहुत से बंदर दिखाई दे जाते हैं। यहां पक्षी व्याख्या केंद्र भी स्थित है। इसमें पक्षियों के बारे में जानकारियां लिखी हुई हैं। राज्य पक्षी सारस और कमल के खिले फूल यहाँ देखे जा सकते हैं। सुबह और शाम को यहां ज्यादा पक्षी दृष्टिगोचर होते हैं।

पार्वती अरगा पक्षी विहार

1990 में बना पार्वती अरगा पक्षी विहार उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले में स्थित है। इसमें पार्वती और अरगा दो जलाशय हैं जो परस्पर जुड़े हुए हैं। यह झील प्राकृतिक रूप से गहरे क्षेत्र में जल एकत्र होने से निर्मित हुई है। इन झीलों को सरयू नदी के अवशेष के रूप में भी जाना जाता है। रामसर स्थल बनने से यहां पर्यटन की संभावनाओं में बहुत वृद्धि हुई है जिससे क्षेत्र के संरक्षण और संवर्धन में सहयोग प्राप्त होगा। इस स्थल से जुड़ी पार्वती-महादेव के प्रेम की कहानी भी चर्चित है। पार्वती के नाम से यहां एक गांव और उसके निकट ही महादेव का मंदिर भी स्थित है। यहां प्रवासी पक्षियों के साथ-साथ अनेक स्थानीय पक्षी भी आते हैं। जिनके नाम यहां बोर्ड पर लिखे हुए देखे जा सकते हैं।

सरसू नावर झील

सरसू नावर झील उत्तर प्रदेश के एटा जिले में स्थित है। यहां हजारी महादेव का अत्यंत प्रसिद्ध मंदिर है। यह दो छोटी झीलों से मिलकर बनी है। इसके जल का मुख्य स्रोत मानसून वर्षा

है। 1987 में इसकी स्थापना हुई।

सूर सरोवर पक्षी विहार

सूर सरोवर पक्षी विहार उत्तर प्रदेश में आगरा के निकट स्थित है। इसको कृत्रिम झील भी कहा जाता है। इस मानव निर्मित झील को गर्मियों में आगरा नगर को पेयजल की आपूर्ति के लिए निर्मित किया गया था। इस पक्षी विहार के 400 हेक्टेयर के क्षेत्र में 300 हेक्टेयर का क्षेत्र झील से आच्छादित है। इसके अब अंतर्राष्ट्रीय मानचित्र पर होने से यहां पर्यटन की संभावनाएं बढ़ी हैं।

हैदरपुर पक्षी विहार

हैदरपुर आर्द्रभूमि क्षेत्र उत्तर प्रदेश का नवां रामसर स्थल है। यह मानव निर्मित झील उत्तर प्रदेश में बिजनौर से 16 किलोमीटर दूर मुजफ्फरनगर बिजनौर की सीमा पर स्थित हस्तिनापुर वन्य जीव अभयारण्य का एक भाग है जो कि गंगा और सोलानी नदी के बीच 6000 हेक्टेयर भूमि में फैला हुआ है। यहां हैदरपुर पक्षी महोत्सव का भी आयोजन किया जाता है। वर्ष 1984 में मध्य गंगा बैराज के साथ इसका निर्माण किया गया था जिससे नदी में बाढ़ आने पर यहां जल को संग्रहित किया जा सके। यहां पेड़-पौधों की अनेक प्रजातियों के साथ-साथ पक्षियों, जलीय पक्षियों और मछलियों की भी सैकड़ों प्रजातियां पाई जाती हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलने पर अब इसका संरक्षण श्रेष्ठ तरीके से किया जा सकेगा और यह आर्द्रभूमि विदेशी पर्यटकों की पर्यटन सूची में भी शामिल हो सकेगी। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में आर्द्रभूमि के कारण उस क्षेत्र में भूगर्भ जल का पुनः पूरण भी सम्भव होता है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में स्थित हस्तिनापुर वन्य जीव विहार (अभयारण्य) में आर्द्रभूमि क्षेत्र पर प्रवासी पक्षी क्रीड़ा करते देखे जा सकते हैं। एशिया, यूरोप एवं कई बार अमेरिकी महाद्वीप से भी प्रवासी पक्षी यहां पहुंचते हैं। हिमालयी क्षेत्र साइबेरिया, चीन से पक्षी यहां आते हैं, क्योंकि वहां सर्दियों में अधिक ठंड होती है प्रवासी पक्षी यहां 4 महीने रहते हैं, अंडे देते हैं जिससे बच्चे निकलते हैं और फिर ये पक्षी अपने देश को अपने बच्चों के साथ वापसी करते हैं। हस्तिनापुर वन्य जीव विहार कई किलोमीटर में फैला हुआ है। यह स्थल जल से परिपूर्ण है, कहीं-कहीं दलदली जमीन भी है। पेड़-पौधे, गंगा का क्षेत्र, गंग नहर की एक धारा, कई प्रकार के कीड़े, कई किस्मों की घास, कुल मिलाकर जैवविविधता से भरपूर इस स्थान पर पक्षियों की सैकड़ों प्रजातियां उपलब्ध हैं। जलीय पक्षी जल, वायु, मृदा से कीट पतंगों को खाकर पर्यावरण को शुद्ध करते हैं। यहां सारस के जोड़े भी दर्शनीय हैं।

बखिरा वन्य जीव अभयारण्य

बखिरा वन्य जीव अभयारण्य उत्तर प्रदेश राज्य के पूर्वांचल में संत कबीर नगर जिले में स्थित है। वर्ष 1990 में यह पक्षी विहार बना और यहां शिकार पर प्रतिबंध लगाया गया। यहां 29 वर्ग किलोमीटर में फेली एक ऐतिहासिक प्राकृतिक विशाल झील है जिसे बखिरा झील या मोती झील भी कहा जाता है। इसमें वर्ष भर जल उपलब्ध रहता है। किवदंती है कि प्राचीन काल में यहां एक सुंदर नगर हुआ करता था लेकिन प्राकृतिक और भौगोलिक कारणों से वह नगर झील में परिवर्तित हो गया। लोगों का ऐसा भी मानना है कि किसी समय राप्ती नदी में आई बाढ़ से यह नगर झील में परिवर्तित हो गया। इस झील में सर्दियों में तिब्बत, साइबेरिया, यूरोप, चीन और सुदूर क्षेत्रों से हजारों पक्षी आते हैं। इस उपेक्षित झील के रामसर स्थल में सम्मिलित होने से यहां राज्य पक्षी सारस संरक्षण केंद्र बनाने की योजना के साथ-साथ इस पक्षी विहार के विकास की अनेक योजनाएं भी निर्मित हो रही हैं।

भारत का राष्ट्रीय पुष्प कमल इस आर्द्रभूमि में पाया जाता है। सारस (क्रेन) उत्तर प्रदेश का राज्य पक्षी है। जो आर्द्रभूमि में निवास करता है। आर्द्रभूमि दिवस पर आर्द्रभूमि में सारस संरक्षित करने होते हैं। सारस के जीवन के लिए जलग्रहण क्षेत्र को बचाना होगा, अतिक्रमण को रोकना होगा। बाढ़ से उफनाई नदियों का जल आर्द्रभूमि को प्राप्त हो ऐसा प्रबंध करना होगा। साथ ही बाघ, हाथी व पक्षी अभयारण्यों की तर्ज पर सारस संरक्षण स्थल विकसित करने होंगे।

आर्द्रभूमियां सम्पूर्ण विश्व से धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही हैं। आर्द्रभूमि के नष्ट होने के कई कारण हैं। कहीं-कहीं इनका बड़ा भू-भाग कृषि भूमि में परिवर्तित कर दिया गया और कृषि के लिए जल निकासी से आर्द्रभूमि सूखने लगी, फिर अतिक्रमण कर इन पर मानव बस्तियां बसा ली गईं। प्रदूषण, उद्योग धंधों व सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट के कारण हजारों झीलें मृतप्राय हो गई हैं। प्लास्टिक के बढ़ते प्रयोग के कारण माइक्रोप्लास्टिक और रसायनों का प्रदूषण भी आर्द्रभूमि में बढ़ गया है। हमने वन क्षेत्र घटाया, जल का भूजल भंडार घटाया और आर्द्रभूमि भी निरंतर खोते जा रहे हैं। इन्हें संरक्षित करना अति आवश्यक है। रामसर क्षेत्र में शामिल न होने पर भी आर्द्रभूमि का महत्व कम नहीं होता है।

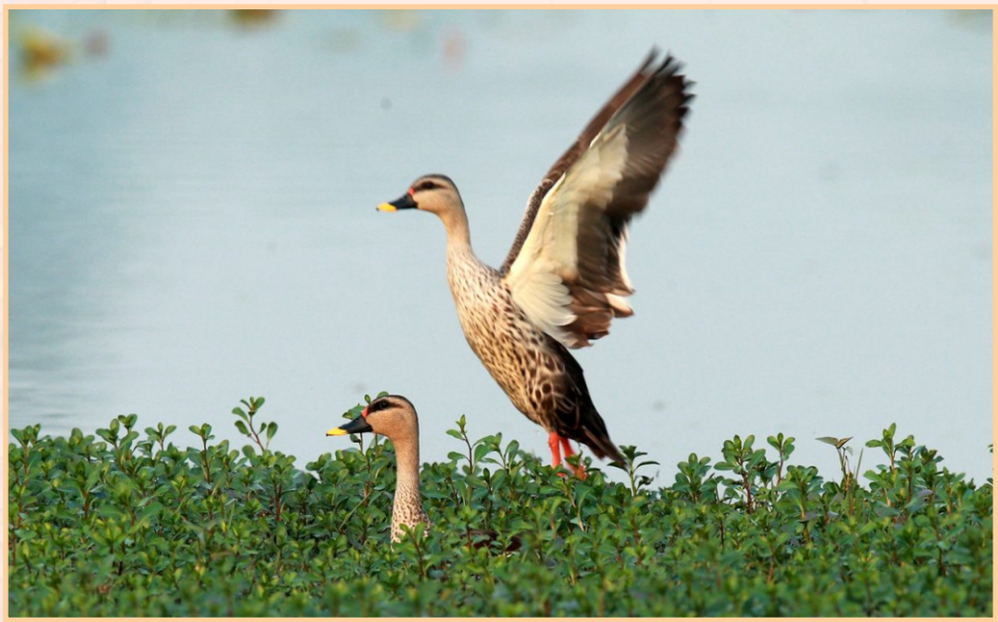

नवाबगंज पक्षी विहार

संपर्क करें:
डॉ. अर्पिता अग्रवाल,
120 बी/2 साकेत, मेरठ।